राजयोग का जादू

ब्रह्माकुमार चन्द्रमोहन, बालेश्वर (उड़ीसा)

मैं बाल्यकाल से शिव की भक्ति तो करता था परन्तु शिव कौन हैं, उनका कर्त्तव्य क्या है, वे कहाँ रहते हैं, मैं कौन हूँ, कहाँ से आया आदि बातों का ज्ञान बिल्कुल नहीं था। इस कारण कर्मों की गहन गति से अनभिज्ञ मैं नशाग्रस्त मानव था। बीड़ी, तम्बाकू, पान, चाय, गांजा, मांस, मछली आदि सभी तामसिक चीजों का सेवन करता था। इनमें पैसा खर्च खूब होता था परन्तु इनके साथ दु:ख, अशान्ति तो मुफ़्त में ही मिल जाते थे। सन् 2000 में मेरा बड़ा पुत्र, घर से 150 कि. मी. दूर एक विद्यालय में शिक्षक के पद पर नियुक्त हो गया। उसी वर्ष उसे राजयोग का ज्ञान मिल गया और उसकी तकदीर की रेखा बदलने लगी, जीवन में दिव्यता भरने लगी, बोल-व्यवहार, खान-पान सब कुछ बदला हुआ दिखने लगा। उससे ईश्वरीय ज्ञान सुनकर मेरी युगल, बेटी, छोटा बेटा, घर से एक कि. मी. दूर ब्रह्माकुमारी पाठशाला में ज्ञानामृत पीने जाने लगे। ज्ञान तो मुझे भी अच्छा लगा, पर व्यसन का क्या करूँ? इसके कारण वहाँ जाने में शर्म आती थी। घर में भोजन सात्विक बनने लगा, मैं भी भोजन तो सात्विक खाने लगा पर ज्ञान-पाठशाला में जाऊँ या ना जाऊँ, इस निश्चय-संशय में मन झूलता रहा। एक दिन हमारे घर में ज्ञान-चर्चा चल रही थी। मैंने उसमें एक विशेष महावाक्य सुना, ''हास्पिटल में बीमार लोग जाते हैं रोगमुक्त होने के लिए, यदि आप घर में ही रोगमुक्त होने की कोशिश और इन्तज़ार करते हैं तो हास्पिटल किसलिए बने हैं, शिव बाबा सुप्रीम सर्जन हैं, सभी कारणों का निवारण करने वाले हैं।'' इस महावाक्य को सुनकर मन में शक्ति जागृत हुई कि मैं पाठशाला ज़रूर जाऊँगा, ज्ञान-योग के अभ्यास से मेरी यह बुरी आदत छूट जाएगी। इस प्रकार, सन् 2002 में मैं पहली बार ज्ञान-योग सीखने बाबा के घर पहुँचा, तब से प्रतिदिन जाने लगा। संगठन की शक्ति ने मुझे भी शक्ति प्रदान की। जीने का नया अध्याय आरम्भ हुआ। सभी बुरी आदतें छूट गईं। रह गये बीड़ी और गांजा। गांजा छोड़ने में 3 वर्ष और मेहनत की तब जाकर 2005 में शिवरात्रि के दिन इसमें भी सफलता मिल गई परन्तु बीड़ी की बेड़ी तो अभी भी पड़ी हुई थी।

मुझे आबू स्थित महान तपोभूमि पर जाने की अनुमति मिल गई, परन्तु जाने के एक दिन पहले तक बीड़ी की बेड़ी नहीं कटी। मैंने सोचा, मधुबन तक इसे साथ तो ले नहीं जाऊँगा, आने के बाद फिर देखा जाएगा। लेकिन मधुबन पहुँचते ही उस पावन वातावरण ने मुझ पर जादू कर दिया, मैंने वहीं दृढ़प्रतिज्ञा की और कागज़ पर लिखकर प्यारे बाबा को दिया कि मैं कभी भी गन्दी चीज़ का सेवन नहीं करूँगा। प्रतिज्ञा तो मैंने पहले भी कई बार की थी परन्तु कुछ दिन चलकर फिर टूट जाती थी, फिर जैसे का तैसा बन जाता था। पर बाबा की तपोभूमि का कमल-तुल्य स्पर्श मेरे लिए वरदान साबित हुआ जिसने मुझ दानव को मानव और फिर देव-समान बनने की ओर अग्रसर किया। पिछले 65 वर्षों की बुरी आदत, मधुबन में 65 सेकेंड भर में पानी पर लकीर की तरह मिट गई। संसार में जो असम्भव था वह प्यारे बाबा के जादू से सम्भव हो गया। बिना किसी दवा के, राजयोग ने ही कमाल कर दिया। प्यारे बाबा ने हमारे सारे परिवार को अपना बना लिया। अब तो ना कोई चिन्ता है, ना कोई दिक्कत। जीवन के शब्दकोष से दु:ख-दर्द शब्द निकल गया है। दिल तो यही गाता है, वाह, बाबा वाह, किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूँ?

आज के मनुष्यों से मेरा इतना ही नम्र निवेदन है कि ज्ञान-योग से जीवन को हीरे जैसा बनाकर एक स्वस्थ समाज बनाने में भगवान का सहयोग करें। सर्वशक्तिवान की शक्तियों को अपने में भरकर देखें, जीवन कितना खुशहाल हो जाएगा। युवाशक्ति भी अपनी ताकत को सही दिशा में लगाने का प्रयत्न करे तो भारत स्वर्ग बन जाएगा। आइये, राजयोग के प्रयोग से व्यसनमुक्त, तनावमुक्त रामराज्य स्थापन करने में मिल जुलकर आगे आएं। ❖